बरसों बरस बनारस

शहर बनारस -अनादि अनंत ।कई प्राचीन मान्यताओं से घिरा प्रलय व प्लावन से अप्रभावित,अविचलित, त्रिशूल की नोक पर युगों से सुरक्षित । अपनी प्राचीनता में अद्भुत है बनारस। समय के अंतराल में परिवर्तन के क्रम में बहुत कुछ नया जुड़ने के बावजूद बनारस का सनातन स्वरूप जस का तस है ।बनारस एक शहर भर नहीं है,मन में बसा चिरन्तन दृश्य -जीवन्त और स्पंदित भरपूर दृश्य जंहा बहुत कुछ है -छू जाने को ,ठहर जाने को ,मन रम जाने को।भूल-भूलैया सी गलियाँ है बनारस,असंख्य गंगा घाट है बनारस,मीठे पान की गिलौरी है बनारस,सुबह -सुबह कुल्हड़ चाय की चुस्की है बनारस ,पूरी-कचौड़ी की महक है बनारस, लय- तान -नृत्य संगीत है बनारस,ठुमरी भी और ग़ज़ल भी है बनारस,संस्कृति साहित्य का गढ़ है बनारस, आस्था व श्रद्धा का तीर्थ है बनारस,प्रात: गंगा डुबकी है बनारस,संध्या अग्नि शिखा आरती है बनारस, राग है तो विराग भी है बनारस, योग भी और वियोग भी बनारस,साधना और समाधि है बनारस, जीवन है बनारस व मरण भी है बनारस ,शिव भी व शव भी है बनारस ।मुक्तिद्वार व मुक्तिधाम है बनारस ।सावन के महीने में इसी बनारस शहर में मैं हूँ .....सामने गंगा है , असी घाट है,और मेरी मित्र ।

गंगा नदी अपनी उफान पर है।असी घाट की कई सीढ़ियों को तय कर काफ़ी ऊपर तक आ चुकी है ।सावन के माह बरसात के पानी से लबालब गंगा का तेज बहाव जैसे अपने साथ सब कुछ बहा ले जाने को अनादि-आस्था व श्रद्धा के फूल,मोह-माया के झरते फूल और

साथ ही असंख्य लोगों के न जाने कौन कौन से
भाव…….कहे-अनकहे ।